अभ्यास पत्रक

पाठ – लखनवी अंदाज़

नाम :- ..... अवधि :- ..... अनुक्रमांक :- ..... प्राप्तांक :- .....

प्रश्न 1: बहुविकल्पीय प्रश्न (MCQ) (1×5 = 5 अंक)

1. लेखक ने सेकंड क्लास का टिकट क्यों लिया था?

   (क) पैसे बचाने के लिए (ख) ट्रेन बहुत भरी थी

   (ग) कहानी पर सोचने और प्राकृतिक दृश्य देखने के लिए (घ) पहले दर्जे की टिकट नहीं मिली

2. नवाब साहब लेखक से क्यों असहज हो उठे?

   (क) लेखक ने उनका खाना छीन लिया (ख) लेखक ने उन्हें खीरा खाते देख लिया

   (ग) लेखक ने उनसे बात नहीं की (घ) लेखक ने उन्हें पहचान लिया

3. 'खीरा' इस पाठ में किस बात का प्रतीक है?

   (क) ताजगी का (ख) शीतलता का (ग) गरीबी का (घ) रईसों के बनावटीपन का

4. नवाब साहब ने खीरे की फाँकों को खा क्यों नहीं पाए?

   (क) खीरे सड़े हुए थे (ख) लेखक ने मना किया

   (ग) उन्हें अपनी रईसी दिखानी थी (घ) खीरे तीखे थे

5. लेखक ने अंत में किस पर व्यंग्य किया है?

   (क) लेखक समाज पर (ख) नई कहानी लेखन की प्रवृत्ति पर

   (ग) लोकल ट्रेनों की व्यवस्था पर (घ) लखनऊ के खीरों पर

प्रश्न 2: रिक्त स्थानों की पूर्ति करें – (1×2 = 2 अंक)

1. लेखक के अनुसार खीरे की सुगंध और स्वाद की _____ से नवाब साहब को तृप्ति मिली।
2. लेखक को अंत में समझ आया कि "ये हैं _____ के लेखक।"

प्रश्न 3: लघु उत्तरीय प्रश्न (30–40 शब्दों में उत्तर दें) (4 में से कोई 3 करें) – (3×2 = 6 अंक)

1. नवाब साहब की 'नफ़ासत' और 'नज़ाकत' किस प्रकार प्रकट होती है?

उत्तर - .....

.....

.....

2. लेखक ने 'तौलिया झाड़कर' खीरे सजाने की क्रिया को कैसे चित्रित किया है?

उत्तर - .....

.....

.....

3. लेखक ने नवाब साहब को 'किबला' कहकर क्यों संबोधित किया?

उत्तर - .....

.....

.....

4. 'खीरे' के बहाने लेखक क्या सामाजिक टिप्पणी करना चाहते हैं?

egyanarchive

उत्तर - .....

.....

.....

प्रश्न 4: गद्यांश आधारित प्रश्न (1×4 = 4 अंक)

"खीरे की एक फाँक उठाकर होंठों तक ले गए। फाँक को सूँघा। स्वाद के आनंद में पलकें मुँद गईं… नवाब साहब ने फाँक को खिड़की से बाहर छोड़ दिया।"

1. नवाब साहब ने खीरे की फाँक को खाया क्यों नहीं?

उत्तर - .....

.....

2. 'पलकें मुँद गईं' – इस भाव का क्या संकेत है?

उत्तर - .....

.....

3. लेखक इस क्रिया से क्या व्यंग्य व्यक्त करते हैं?

उत्तर - .....

.....

4. यह दृश्य नवाब साहब के किस आंतरिक संघर्ष को उजागर करता है?

उत्तर - .....

.....

प्रश्न 5: दीर्घ उत्तरीय प्रश्न – (1×8 = 8 अंक) *उत्तर सीमा: 80–100 शब्द*

प्रश्न: 'लखनवी अंदाज़' कहानी में यशपाल ने एक छोटे से दृश्य के माध्यम से सामाजिक दिखावे, सामंती मानसिकता, और नई कहानी आंदोलन पर तीखा व्यंग्य किया है। पाठ के आधार पर इस कथन की पुष्टि कीजिए।

उत्तर - .....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

egyanarchive

उत्तर कुंजी

प्रश्न 1 – MCQ उत्तर:

1. (ग) कहानी पर सोचने और प्राकृतिक दृश्य देखने के लिए
2. (ख) लेखक ने उन्हें खीरा खाते देख लिया
3. (घ) रईसों के बनावटीपन का
4. (ग) उन्हें अपनी रईसी दिखानी थी
5. (ख) नई कहानी लेखन की प्रवृत्ति पर

प्रश्न 2 – रिक्त स्थान उत्तर:

1. कल्पना
2. नई कहानी

प्रश्न 3 – लघु उत्तरीय उत्तर:

1. नवाब साहब खीरे को सूँघकर फेंकते हैं, लेकिन खा नहीं पाते – यह उनकी नफ़ासत और रईसी दिखाने की झिझक को दर्शाता है।
2. लेखक ने उस पूरे क्रिया-कलाप को एक 'नाटक' की तरह दर्शाया जिसमें खीरे को रईसियत के साथ सजाया गया, पर खाया नहीं गया।
3. 'किबला' शब्द सम्मान और व्यंग्य का मेल है — लेखक नवाब को शिष्ट तरीके से उलझाते हैं।
4. लेखक दिखाना चाहते हैं कि समाज में बहुत से लोग अपनी असलियत छुपाकर झूठी प्रतिष्ठा का दिखावा करते हैं।

प्रश्न 4 – गद्यांश आधारित उत्तर:

1. क्योंकि उन्हें डर था कि लेखक उन्हें खीरा खाते देख लेगा और उनकी बनावटी रईसी पर सवाल उठेगा।
2. खीरे की सुगंध और कल्पना मात्र से नवाब साहब के मन में स्वाद की अनुभूति हो जाती है।
3. लेखक ने यह दिखाया कि कुछ लोग केवल दिखावे के लिए 'संतुष्ट' होने का नाटक करते हैं।
4. यह नवाब के आंतरिक झूठे सम्मान और बाहरी व्यवहार के बीच के द्वंद्व को प्रकट करता है।

प्रश्न 5 – दीर्घ उत्तरीय उत्तर संकेत:

- कहानी में नवाब साहब एक प्रतीक हैं उन लोगों का जो अपनी सामाजिक स्थिति दिखाने के लिए दिखावे की ज़िंदगी जीते हैं।
- खीरे को काटने, सजाने, सूँघने और फिर न खाने की पूरी प्रक्रिया एक हास्यास्पद बनावटी व्यवहार को दर्शाती है।
- लेखक व्यंग्यात्मक शैली में बताते हैं कि जैसे खीरे को सूँघकर डकार आ सकती है, वैसे ही 'नई कहानी' बिना पात्र, घटना और विचार के भी बन सकती है — यह लेखक की तीखी टिप्पणी है।
- अंत में लेखक 'नवाब साहब' को एक प्रतीक बनाकर उस साहित्यिक प्रवृत्ति पर व्यंग्य करते हैं, जो सारहीन लेखन को भी बड़ा बना देती है।

eGyanArchive